मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दशा–एक ऐतिहासिक अध्ययन

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा
के
समाज विज्ञान संकाय (इतिहास)
में
पी–एच॰डी॰ हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप
2024

शोध निदेशक
डॉ॰ कुमार अमरेन्द्र
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एस॰एम॰आर॰सी॰के॰ कॉलेज, समस्तीपुर
ल॰ ना॰ मि॰ विश्वविद्यालय
दरभंगा

शोधार्थी
राजीव कुमार
इतिहास विभाग
ल॰ ना॰ मि॰ विश्वविद्यालय
दरभंगा
पैट रौल–22100317
वर्ग क्रमांक–28

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

डॉ. कुमार अमरेन्द्र
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एस.एम.आर.सी.के. कॉलेज, समस्तीपुर
ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा
मो. 9470246929

आवास
173/कौटिल्य नगर
पो.– बिहार वेटनरी कॉलेज
पटना– 800024

कृष्णा सदन
ग्राम +पो. बरजीहा तुर्की,
जिला–वैशाली, पिन–843110
E-mail : dr.kra65@gmail.com

सेवा में,

विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
ल॰ ना॰ मिथिला विश्वविद्यालय,
कामेश्वरनगर, दरभंगा

विषय : **शोध निदेशक के रूप में सहमति प्रदान करने के सम्बंध में।**

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्र दिनांक 19.03.2024 के संदर्भ में यह उल्लेख करना है कि मेरे निर्देशन में पी–एच॰डी॰ करने हेतु राजीव कुमार, पिता–श्री नागेश्वर प्रसाद चौरसिया, ग्राम–पतिलियर, थाना–बिभूतिपुर, जिला–समस्तीपुर (बिहार) को नामित किया गया है, जिनका शोध का विषय '**मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दशा–एक ऐतिहासिक अध्ययन**' है। इस कार्य के निर्देशन/पर्यवेक्षण करने हेतु मैं अपनी सहमति प्रदान करता हूँ। राजीव कुमार अपने निर्धारित समय में अपना कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

मेरे पर्यवेक्षण में इनका क्रम सं॰– 01 (एक) है।

भवदीय

(कुमार अमरेन्द्र)
शोध निदेशक

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वर नगर, दरभंगा

पी॰–एच॰डी॰ की उपाधि हेतु

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

1. प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध का शीर्षक :

'मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दशा – एक ऐतिहासिक अध्ययन'

2. प्रस्तावना (शोध समस्या, शोध के मुद्दे)

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण रहा है। हिन्दू समाज में उनका सम्मान और आदर प्राचीन काल से आदर्शात्मक और मर्यादायुक्त था। उनकी अवस्था पुरूषों के सदृश्य थी। वे अपना मनोनुकूल आत्म विकास और उत्थान कर सकती थी। उन्हें विवाह, शिक्षा, सम्पत्ति आदि में अधिकार प्राप्त थे। कन्या के रूप में, पत्नी के रूप में तथा माँ के रूप में वे हिन्दू परिवार और समाज में आदृत थीं। उनके प्रति समाज की स्वाभाविक निष्ठा और श्रद्धा थी। लेकिन गुणों के अनुरूप उनकी दशा में परिवर्तन होता रहा। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर मध्यकाल तक अनेक उतार–चढ़ाव आते रहे और उनके अधिकारों में तदनुरूप परिवर्द्धन भी होते रहे। यह सही है कि वैदिक युग में उनकी अवस्था अत्यन्त उन्नत और परिष्कृत थी। किन्तु परवर्ती काल में उनकी स्थिति में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया जो अवनति के रूप में बाद के समयों तक चलता रहा। पुरूषों की तुलना में महिलाओं को समाज में श्रेयस्कर स्थान नहीं मिला, बल्कि अपेक्षाकृत

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

निम्न स्थान ही प्राप्त हुआ जिसके प्रमुख कारण राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक संकीर्णता ही थे। साथ ही जैविकीय और मानसिक दोष की भी चर्चा की गयी। कुछ विद्वानों ने महिलाओं में ऐसे जन्मजात दोष माने जिनके कारण वे पुरुषों की तुलना में हीन रहीं। उनके व्यक्तित्व में अस्थिरता का दोष प्रमाणरूप से स्वीकार किया गया है। साथ ही यह कहा गया है कि उनमें न्याय की भावना अत्यल्प होती है, क्योंकि उनके व्यक्तित्व में ईर्ष्या की मात्रा अधिकाधिक होती है। लेकिन भारतीय समाज में इस प्रकार की कोई भ्रांति नहीं थी। भारतीय विचारकों ने उनके प्रति आदर ही व्यक्त किया है और उन्हें देवी और श्री का प्रतीक माना है।

लेकिन मध्ययुगीन समाज में हिन्दू नारी की स्थिति बड़ी दयनीय व सोचनीय हो गयी थी। भारत में मुसलमानों के आक्रमण के कारण उनकी दशा निरन्तर ह्रास की ओर अग्रसर होती गई। हिन्दू समाज में नारी जीवनपर्यन्त पुरुष वर्ग के अधीन और आश्रित रही। पुत्री के रूप में वह अपने पिता के नियंत्रण में रही और विवाह के बाद उसे पति के आदेशों का पालन करना पड़ता था। वृद्धावस्था में यदि वह विधवा हो जाती थी तो उसे अपने पुत्रों के अधीन रहना पड़ता था। वैसे हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में यह व्यवस्था है कि पति अपनी पत्नी के साथ अच्छा व्यवहार करे। ऐसा न करने पर उसे राज्य द्वारा दण्ड का भागी होना पड़ता था। फिर भी मध्यकाल में कई बाध्यताएँ उत्पन्न हो चुकी थी।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मध्यकाल शुरू से ही एक बहु–विवाहवादी समाज का समर्थक रहा है। इससे पारिवारिक एवं सामाजिक विषमताओं को बढ़ावा मिला एवं एक प्रकार की सामाजिक स्थैतिकता उत्पन्न हुई जिसने नवीन विचारधारा को नकार दिया। अन्य कई प्रकार के अवरोध भी उत्पन्न हुए जैसे पर्दा का प्रचलन बढ़ा, बाल–विवाह प्रथा को अधिक सामाजिक मान्यता प्राप्त हुई। इस नये सामंती सामाजिक संरचना में महिलाओं की स्थति एक पराश्रित वर्ग के रूप में बढ़ी, यहाँ तक कि उनमें अपने मौलिक अधिकारों के प्रति जागरूकता में कमी आई। उनके व्यक्तित्व की पूर्णता हो, ऐसे सामाजिक मूल्य और दायित्व की कमी रही। सम्पत्ति के अधिकार से वह वंचित रही जिसे लेकर समाज में वह दोयम वर्ग के रूप में उभरी। हालांकि, बिहार में महिलाओं के इस अधिकार को प्रदान करने की पहल 'दायभाग कानून' द्वारा पालकाल में ही उद्धृत हो चुकी थी।

मध्यकाल में संभवतः महिलाओं को सम्पत्ति के अधिकार का प्रश्न पुनः उठाया गया। वृहस्पति ने भी विधवाओं को सम्पत्ति के अधिकार की अनुमति नहीं प्रदान की। उन्हें इस अधिकार से वंचित रखा। मेघातिथि जैसे उदारवादी चिंतक ने भी विधवाओं को सम्पत्ति पर अधिकार नहीं दिया है। मिथिला के सार संग्रह यह दर्शाता है कि इस काल के दार्शनिक महिलाओं की सम्पत्ति पर किसी प्रकार का असीमित अधिकार देने के पक्ष में नहीं थे। उन्हें उत्तराधिकार एवं विहित का अधिकार नहीं था, परन्तु स्त्री धन या यौदायिका का क्षेत्र अवश्य विस्तृत किया गया। सौदायिका वह प्रचलन था जहाँ एक स्त्री

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

को विवाह से पूर्व अपने पिता, भाई या अन्य सम्बन्धी से प्राप्त किया उपहार या सम्पत्ति का कोई अंश प्राप्त होता था। सौदायिक के अन्तर्गत दस मद्ध थे। वाचस्पति ने उन दस मद्धों को स्त्रीधन के रूप में उनकी निजी सम्पत्ति माना है।

फिर भी मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की स्थिति और दयनीय थी। मिथिला में कुलीनवादी पद्धति ने महिलाओं की आदत को और बदतर बनाया। वहाँ बहुविवाह धड़ल्ले से प्रचलित हुआ। माता–पिता के द्वारा अपनी पुत्रियों को थोड़े से सिक्के के लिए बेचा जाने लगा। बेमेल विवाह की बात विद्यापति ने भी स्वीकारा है। पन्द्रहवीं सदी में निःसन्देह लखिमा, धीरमति, विश्वास देवी एवं चन्द्रकला देवी जैसे औरतें पैदा हुई। लेकिन बाद के वर्षों में इस तरह की महिलाओं का दृष्टांत नहीं मिलता और अब वह घर के चहारदिवारी मे कैद हो गई। अब उनका शिक्षित होना मजाक का विषय हो गया। इस काल में वेश्याओं का मजाक उड़ाया जाने लगा और वेश्याओं का चित्रण निर्लज्ज जंतुओं की तरह किया गया है। जिनका प्यार केवल पैसे के लिए है। समाज उनको घृणा की दृष्टि से देखता था किन्तु उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति की चिंता किसी को न थी जो वेश्यावृत्ति की जननी थी। बुकानन के अनुसार बिहार के पटना जिले में वेश्याओं के 800 घर थे।

मध्यकालीन बिहार में सती प्रथा काफी प्रचलित थे। औरतों द्वारा सती होने के साक्ष्य मिलते हैं। मिथिला में राजा भवसिंह की दो पत्नियों ने बागमती नदी के किनारे अपने को सती बना लिया। कर्णाट राजा शिवसिंह देव की

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

पत्नी लखिमा देवी अपने पति की मौत की खबर सुनकर सती हो गई थी। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि समाज के उच्च वर्गों में सती प्रथा मौजूद रही होगी। लेकिन जनसाधारण में यह बात बिल्कुल नहीं थी। इस पद्धति को दो शताब्दी बाद अकबर के समय कानून बनाकर निषिद्ध कर दिया गया।

सैद्धान्तिक रूप से हिन्दू स्त्री की तुलना में मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति बेहतर थी। इस्लाम धर्म में बाल विवाह वर्जित था तथा विवाह के पूर्व कन्या की अनुमति अनिवार्य थी। इस आधार पर मुसलमान समुदाय में नवजात कन्या शिशु की हत्या नहीं होती थी, जबकि हिन्दू समुदाय में बाल विवाह का प्रचलन बढ़ा, दहेज प्रथा के बढ़ते बोझ को लेकर ही नवजात शिशु की हत्या बढ़ी। हिन्दू स्त्री मृत्योपरांत विवाह के बंधन से अलग नहीं हो सकती थी जिसे एक दीघ विधवा जीवन या सती के लिए बाध्य होना पड़ता था। सम्पत्ति के मामले में भी मुस्लिम स्त्रियों को पर्याप्त अधिकार प्राप्त थे एवं पृथक हिस्सा प्राप्त करने का अधिकार था। इसके अतिरिक्त मेहर की राशि पर भी स्त्री का पूर्ण अधिकार होता था जबकि हिन्दू स्त्री को सम्पत्ति में स्वतंत्र अधिकार प्राप्त नहीं था। हिन्दू विवाह में अंतर्विवाह और कुलन विवाह (अनुलोम) के नियम का पालन अनविार्य था। हालांकि इस्लाम में समानता का अधिकार दिया गया परन्तु व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र निर्णय लेने में वह समर्थ नहीं बनाई गई।

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मध्यकालीन बिहार में दास प्रथा का प्रचलन भी था। इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी के अनुसार दास एवं रखैलों की कीमत अनिश्चित होती थी। विद्यापति ने कीर्तिलता में दास-दासियों के लिए एक बाजार का वर्णन किया है। बुकानन भी इस जानकारी की पुष्टि करते हुए लिखते हैं कि भागलपुर, पटना, दानापुर में दास-दासियों को रखने का प्रचलन था।

बिहार प्रारंभ से ही एक समन्वित एवं सहिष्णु धार्मिक विचारधारा का केन्द्र रहा है। प्राचीन बिहार में सुजाता, आम्रपाली जैसी बौद्ध मतावलम्बी एवं भिक्षुणी थीं जो सार्वजनिक जीवन में प्रवेश का अधिकार पाती हैं, उसी प्रकार मध्यकाल में इस्लाम धर्म के सरल एवं उदारवादी विचारधारा को महिला सूफी-संतों के द्वारा भी बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में सूफी विचारों का विस्तार स्थानीय स्तर पर कर इसे लोकप्रिय बनाया। इनमें प्रसिद्ध सूफी संत पीर शहाबुद्दीन जगतजोत की पुत्री बीबी मदीना जो बीबी कमाल के नाम से लोकप्रिय हुई। इनका विवाह सुलेमान लंगर जमीन के साथह ुआ जो बिहार के लोकप्रिय सूफी संत माने जाते थे। इनकी तीन बहनें थी, जिनमें सबसे बड़ी रजिया का विवाह हजरत याहिया मनेरी के साथ हुआ जो बिहार के सबसे लोकप्रिय सूफी संत थे। बीबी आएशा भी एक प्रसिद्ध सूफी महिला संती थी जो फुलवारीशरीफ के शाह मोहम्मद मुजीबउल्लाह की पुत्री थी। एक अन्य सूफी महिला संत बीबी वालिया थी, जिनका जन्म अमझारशरीफ में गया के निकट हुआ था। इनका विवाह शाह मखदूम कादिरी के साथ हुआ था। चूँकि

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

बिहार में कादिरी सिलसिला अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था। सूफीवाद के रहस्यमयी दार्शनिकता के प्रचलन को बनाये रखते हुए इनकी एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रचना 'मालमाते–वालिया' आज भी फुलवारीशरीफ के खानकाह मुजिबिया के पुस्तकालय में है। इनके द्वारा कई दोहे फारसी एवं उर्दू में लिखी गयी है। इन महिला संतों का वर्णन इस स्थानीय धार्मिक स्थलों एवं सूफी साहित्यों में पाते हैं। जिस प्रकार से हिन्दू धर्म में महिलाओं का धार्मिक संगठन में प्रवेश प्रतिबंधत था, ऐसा प्रचलन बौद्ध एवं सूफी मतों में नहीं था। यह एक सुधारवादी प्रतिवादी आन्दोलन के रूप में आयी और इस नये विचारधारा के अन्तर्गत महिलाओं के प्रति उस अलगाववाद की भावना को इन संगठनों ने अस्वीकार किया। बिहार में ऐसी कई महिलाओं की एक सकारात्मक भूमिका रही है जो अपने योग्यता, और अनुभवों के आधार पर आगे बढ़ी और अपनी पहचान स्थापित की।

मध्यकालीन बिहार के संदर्भ में महिलाओं की भूमिका अधिकांशतः एक साहित्यिक आवरण के साथ प्रस्तुत की गई है। मिथिला की सार पुस्तिका में चूँकि प्राचीन स्मृति से उद्धृत नियमों का उल्लेख मिलता है जिसमें महिलाओं की अधीनस्थता का औचित्य प्रस्तुत होता दिखता है। लेकिन जिस प्रकार से विशिष्ट महिलाओं की एक लम्बी–श्रृंखला मिलती है जो साहत्यिक अभिरूचि रखती थी। मिथिला की रानी विश्वास देवी राजनीति के साथ साहित्यिक क्षेत्र में भी गहरी रूचि रखती थी। विद्यापति के अनुसार विश्वास देवी के

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

अनुशंसा पर ही उनके द्वारा 'शैव सर्वस्वसार' तथा 'गंगा-वाक्यावली' जैसी रचना का लेखन हुआ। इन दोनों रचनाओं में विद्यापति एक संकलनकर्ता मात्र रहे। उनके द्वारा उद्धृत दृष्टान्तों से इन ग्रंथों को एक समुचित रूप प्राप्त हुआ। 'शैव सर्वस्वसार' में लगभग 2507 श्लोक है। वहीं 'गंगा-वाक्यावली' में विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के श्लोक जो गंगा की पावनता को दर्शाते हैं का बखूबी वर्णन है।

एक अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व जया देवी भी थी। भैरव सिंह की पत्नी के आदेश पर वाचस्पति मिश्र और मिश्राउ मिश्र के द्वारा 'द्वैत निर्णय' और 'विवाद चन्द्र' जैसी कृतियों का संकलन भी इस समय हुआ। विद्वानों ने कुछ अन्य साहित्यिक रचनाओं के लिखने का श्रेय मिथिला की रानियों को दिया है। इनमें लखीमा ठाकुर के चार श्लोक को सूचना पट्टी में लाया है। न श्लोकों में एक लखीमा का बहुआयामी व्यक्तित्व उभरता है। इन्हें खगोलशास्त्री का भी ज्ञान था साथ ही साथ वह एक कवियित्री भी थी।

इस काल में राजकीय परिवार के अलावे अभिजात्य वर्ग की महिलाएँ भी संस्कृत एवं मैथिली भाषा में प्रवीण थी। यह काल यहाँ की लोक भाषा मैथिली की समृद्धि का काल भी रहा जिसे आगे बढ़ाने में महिलाओं की भूमिका अभिन्न वाचस्पति मिश्र ने गौरी नामक महिला को आभार प्रकट करते हुए 'श्रद्ध चिन्तामणि' जैसे ग्रंथ के संकलन का श्रेय उन्हें दिया है। इसी तरह लोचन की 'राग तरंगिनी' में विद्यापति की पुत्रवधु चन्द्रकला की कविताएँ

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

संकलित हैं। मिथिला के ये गीत संस्कृत भाषा से गहन रूप से प्रभावित माने जाते हैं जिसे समृद्ध करने का श्रेय महिलाओं को ही जाता है। फिर भी इस काल के महिलाएँ हद तक अज्ञानता एवं अंधविश्वास से घिरी थी। उनकी स्थिति काफी दयनीय थी जिनके कई कारण थे।

सैयद हसन अस्करी के अनुसार लड़कियों को मदरसे या मकतब में नहीं भेजा जाता था। प्रारंभिक शिक्षा वह घर पर ही प्राप्त करती थी। कुरान का पाठ वह घर पर या निजी घरों में संचालित मकतब में ही करती थी। ये मकतब शिक्षित प्रौढ़ महिला विशेषकर मध्यवर्गीय परिवार की विधवाओं द्वारा चलाया जाता था। शिक्षा ग्रहण करने की अनौपचारिक रूप से शिक्षाप्रद कहानियाँ एवं लोक कथाओं के द्वारा भी दिया जाता था ताकि जीवन के आदर्श रूप को वह ग्रहण कर पाये। परन्तु उन परिस्थितियों में स्त्रियों की सार्वजनिकता एवं सामाजिक गतिशीलता बाधित हुई।

मध्यकालीन बिहार में महिलाएँ शासिका के रूप में भी एक असाधारण राजनीतिक भूमिका निभाती हुई पायी गई है। विद्यापति की रचना 'कीर्तिलता' में कर्णाट क्षेत्र की राजनीति पर इस्लामी सत्ता के बढ़ते प्रभाव का वर्णन है, जिसमें कर्णाट वंश की आंतरिक राजनीतिक समस्या से धीरे विषम परिस्थितियों में रानी विश्वास देवी की एक अलौकिक भूमिका दिखती है। विद्यापति का मानना था कि शताब्दियों से किसी महिला को राजनीतिक सत्ता पर अधिकार का अवसर केवल बिहार ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पूर्वी अंचल एवं

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

बंगाल पर भी नहीं पाया गया था। हालांकि विश्वास देवी की राजनीतिक भूमिका का मिथिला के आंतरिक राजनीति में दीर्घकालीन प्रभाव पड़ा। जैसा कि माना जाता है कि जब शिव सिंह के छोटे भाई पदम सिंह उत्तराधिकारी के रूप में आए तब उन्होंने अपनी पत्नी विश्वास देवी को उनकी योग्यता देखकर मिथिला का राजनीतिक दायित्व सौंप दिया। विश्वास देवी ने यह प्रमाणित किया कि एक महिला भी कुशल प्रशासिका हो सकती है।

इसी तरह रूपनारायण रणभ्रद की पत्नी रानी अनुमति का भी वर्णन मिथिला के शासिका के रूप में मिलता है, जिसने 1482 से 1496 तक शासन की। कर्णाट राज्य में जब राजनीतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हुई वैसी स्थिति में रानी अनुमति ने कूटनीतिज्ञता का परिचय देते हुए इस समस्या का हल निकाला। कुछ अन्य महिलाओं जिसमें शेरशाह की पत्नी दूदू बेगम, तथा लाड मलिका की चर्चा शासिका के रूप में की गई है जिसने अपने समय में सुझ–बूझ से शासन का संचालन की। मध्यकालीन बिहार में इन उल्लेखनीय महिलाओं की तुलना में सामान्य वर्ग की महिलाओं की स्थिति बहुधा भिन्न थी। कुलीन वर्ग की महिलाएँ पुरूषों के समकक्ष बनी रही एवं कई के द्वारा एक सक्रिय राजनीतिक एवं सांस्कृतिक भूमिका निभाई गई।

मध्यकालीन बिहार की महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कामयाबी के झंडे लहराये हैं। उनकी गौरवगाथा निःसन्देह प्रशंसनीय है। ऐसी महिलाओं में लखिमा ठकुराइन, चामुण्डा, लखिमा, चन्द्रकला, कादम्बरी, बीबी कमाल, बीबी

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

रजिया, बीबी आयशा, विश्वास देवी, रापनी धृमति, दूदू बेगम तथा लाड मलिका का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

3. पूर्व अध्ययन :

मध्यकालीन बिहार की सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन में महिलाओं की दशा के संबंध में इतिहासकारों ने ज्यादा नहीं लिखा है। फिर भी मध्यकालीन भारत के जाने–माने इतिहासकार सैय्यद हसन अस्करी एवं क्यामुद्दीन अहमद की सम्पादित पुस्तक 'कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार', खण्ड–1, भाग–2, में तथा सैय्यद हसन अस्करी की प्रसिद्ध पुस्तक 'इस्लाम एण्ड मुस्लिम इन मेडियवल बिहार' में काफी हद तक महिलाओं की स्थिति की जानकारी दी गई है।

इन पुस्तकों के अलावे सैय्यद शाह समीउद्दीन मुनएमी की पुस्तक 'बिहार में सूफी परम्परा' कुछ हद तक प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए उपयुक्त है। इस पुस्तक में मात्र बिहार के कुछ प्रमुख महिला सूफी संतों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा है, जो महिलाओं के धार्मिक अवदानों को रेखांकित करती नजर आती है। इसी क्रम में अहमद एवं कमर अहसन द्वारा लिखित पुस्तक 'बिहार एक परिचय' तथा प्रमोदानन्द दास एवं कुमार अमरेन्द्र की पुस्तक, 'बिहार : इतिहास एवं संस्कृति' में भी इस संबंध में काफी रोचक जानकारी मिलती है। इसके साथ ही विजय कुमार सम्पादित 'बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका' नामक पुस्तक में सुनीता शर्मा लिखित 'मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की भूमिका' भी काफी उत्कृष्ट है, जो

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मध्यकालीन बिहार की महिलाओं की दशा को बड़े रोचाकता के साथ लिखी गई है। लेकिन जो भी हो मध्यकालीन बिहार की महिलाओं की दशा पर अभी तक कोई प्रत्यक्ष अध्ययन नहीं किया गया है। आज के बदलते परिवेश में मध्यकालीन बिहार की महिलाओं की दशा तथा विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदानों पर कार्य करने की जरूरत नहीं है। इसी क्रम में मेरा यह प्रस्तावित शोध कार्य 'मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दशा – एक ऐतिहासिक अध्ययन' इसी कमी को पूरा करने में एक विनम्र प्रयास होगा।

4. उद्देश्य, महत्व एवं प्रासंगिकता :

प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध का उद्देश्य स्पष्ट है। आज महिलाओं के ऊपर विश्व के बुद्धिजीवियों का ध्यान गया है और इसे ही केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। फिर भी आशानुकूल कार्य हो रहे हैं। मध्यकालीन बिहार में महिलाएँ उपेक्षित थी उनकी दशा अच्छी नहीं थी, उसके क्या कारण थे, उसी कारणों की खोज की आवश्यकता है। शोध कार्य का विषय नया है और अलग से ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में इस विषय पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। अतएव इसी उद्देश्य से प्रस्तुत विषय वस्तु पर कार्य करने की जरूरत है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदान :

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में हमें ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश कराएगा। इस शोध–प्रबन्ध को प्रस्तुत करने का मुख्य उद्देश्य मध्यकालीन समाज में स्त्री

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

असमानता, शोषण और दमन के मुद्दे तथा उसमें महिलाओं की सशक्तिकरण को एक नये रूप में लोगों के समक्ष लाना, एक महान कार्य होगा। यह शोध कार्य ज्ञान के क्षेत्र में नारी समाज को एक सम्बल प्रदान करेगा।

6. अध्ययन क्षेत्र :

प्रस्तावित शोध अध्ययन का क्षेत्र मध्यकालीन बिहार तक ही सीमित है। इस अध्ययन में मध्यकालीन बिहार की महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी को प्रमुख स्थान दिया जायेगा। इस क्रम में उनकी उतरोत्तर गिरती स्थिति का हर दृष्टि से अवलोकन किया जायेगा की आखिरकार इसके पीछे क्या कारण थे। प्राचीन काल के भाँति उन्हें क्यों नहीं सम्मानजनक स्थान दिया गया।

7. शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में सैद्धान्तिक, ऐतिहासिक और तथ्यात्मक अध्ययन प्रणाली को अपनाया जायेगा। जिनमें साहित्यिक स्रोतों पर अधिक जोर रहेगा। साहित्यिक स्रोतों के तहत् सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं अन्य स्रोतों का भी भरपूर उपयोग किया जायेगा। शोध अध्ययन प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों पर आधारित होगा।

8. शोध सामग्री की उपलब्धता :

प्रस्तुत शोध कार्य को वस्तुनिष्ठता के साथ आगे बढ़ाया जायेगा। जिसमें संबंधित परिपत्र, सूचनाएँ, पुरातात्विक अभिलेखीय सामग्री, तत्कालीन

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

प्रमाणिक रचनाएँ, यात्रियों के विवरण, उपलब्ध राजाज्ञा एवं रचनाओं के अंतर्वीक्षा एवं सर्वेक्षण द्वारा सामग्री इकट्ठा की जायेगी। इसके अलावे इस्लामी ज्ञान–विज्ञान का प्रचार करने वाली कुछ आधुनिक संस्थाओं जैसे– अलीगढ़, इंस्टीच्यूट ऑफ इस्लामिक स्टडीज, नयी दिल्ली के साथ–साथ खुदाबख्श ओरियन्टल पब्लिक लाईब्रेरी, पटना तथा बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना के अलावे मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा एवं के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, पटना से सम्पर्क कर प्रस्तावित शोध कार्य को आगे बढ़ाया जायेगा।

9. परिकल्पना :

प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध कई परिकल्पनाओं के आधार पर तैयार किया जायेगा। कुछ प्रमुख परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दयनीय स्थिति का कारण क्या था?
2. मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की सामाजिक दशा में उत्तरोत्तर गिरावट का मुख्य वजह क्या था?
3. मध्यकालीन बिहार की संस्कृति में महिलाओं का क्या योगदान रहा?
4. मध्यकालीन बिहार की महिलाओं ने धार्मिक क्रियाकलापों में किस तरह भागीदारी निभाई?
5. मध्यकालीन बिहार की महिलाओं ने राजनीतिक क्षेत्र में किस कदर अपनी राजनीतिक हैसियत का परिचय दी?

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

6. मध्यकालीन बिहार की कौन–कौन महिलाओं ने देश–दुनिया में अपने नाम रोशन किये? उसके पीछे कौन–सी ताकत खड़ी थी?

इसके अतिरिक्त कई अन्य परिकल्पनाओं का भी शोध प्रबन्ध में परीक्षण किया जायेगा और उसके आधार पर ही पूरी वस्तुनिष्ठता के साथ शोध–प्रबन्ध तैयार किया जायेगा।

10. कार्य योजना अथवा अध्यायीकरण :

प्रस्तावित शोध–प्रबन्ध 'मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की दशा – एक ऐतिहासिक अध्ययन' निम्नांकित अध्यायों में विभक्त होगा –

	:	प्रस्तावना
प्रथम अध्याय	:	भारतीय इतिहास में महिलाओं की दशा
द्वितीय अध्याय	:	मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की सामाजिक दशा
चतुर्थ अध्याय	:	मध्यकालीन बिहार की संस्कृति में महिलाओं का योगदान
पंचम अध्याय	:	मध्यकालीन बिहार के राजनीतिक गतिविधियों में महिलाओं की भूमिका
षष्ट अध्याय	:	मध्यकालीन बिहार की कुछ प्रमुख महिलाएँ
	:	उपसंहार
	:	सन्दर्भ ग्रंथ सूची

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

11. स्रोत, संदर्भ सूची :

प्राथमिक स्रोत (मूल ग्रंथ) :

अफीफ, शम्सरीराज; किताबुल हिन्द, अंग्रेजी अनु॰– ई॰ सरवाऊ, 'अलबरूनीज इंडिया', लन्दन, 1910

फजल, अबुल : आइने अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद– एच॰ ब्लॉक मैन, जिल्द–1, कलकत्ता, 1867–69

बर्नी, जियाउद्दीन; तारीखे फीरोजशाही, सम्पा॰– सर सैय्यद अहमद खाँ, कलकत्ता, 1862

विद्यापति, कृतिलता, सम्पा॰ महामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री, कलकत्ता, 1939

वाचस्पति मिश्र; नव्यकृत, वाराणसी, 1968

द्वितीय स्रोत (प्रकाशित पुस्तकें) :

अस्करी, सैय्यद हसन; इस्लाम एंड मुस्लिम इन मेडियवल बिहार, पटना, 2002

अस्करी, सैय्यद हसन एवं अहमद, क्यामुद्दीन (सं॰); कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, भाग 1–2, पटना, 1998

अहमद, अजीज; स्टडीज इन इस्लामिक कल्चर इन द इंडियन एनवायरमेंट, ऑक्सफोर्ड, 1964

अहमद, इम्तियाज एवं अहसन, कमर; बिहार एक परिचय, पटना, 1985

अहमद, लईक; भारतीय संस्कृति, इलाहाबाद, 1975

इकराम, एस॰एम॰ एवं राशीद, एस॰ए॰; हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम सिविलाइजेशन इन इंडिया एंड पाकिस्तान, लाहौर, 1904

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

करीम, अब्दुल: सोशल हिस्ट्री ऑफ द मुस्लिम इन बंगाल, ढाका, 1959

कानूनगो, कालिका रंजन: शेरशाह एंड हिज टाइम्स, कलकत्ता, 1865

खाँ, युसूफ हुसैन: ग्लिम्पसेज ऑफ मेडियवल इंडियन कल्चर, बम्बई, 1959

ग्रियर्सन, जी.ए.: स्टडीज इन मेडियवल हिस्ट्री एंड कल्चर, इलाहाबाद, 1966

चन्द्र, सतीश: मध्यकालीन भारत, नई दिल्ली, 1996

चौधरी, राधाकृष्ण: हिस्ट्री ऑफ बिहार, वाराणसी, 1958

चौधरी, आई.के.: सम अस्पेक्ट्स ऑफ सोशल लाइफ इन मेडियवल मिथिल, पटना, 1988

जाफर, एस.एम.: एजुकेशन इन मुस्लिम इंडिया, पेशावर, 1936

ठाकुर, उपेन्द्र: हिस्ट्री ऑफ मिथिला, दरभंगा, 1956

ठाकुर, विजय कुमार: मध्यकालीन मिथिला, पटना, 1981

छास, रासबिहारी लाल: मिथिला दर्पण, दरभंगा, (पुनर्मुदण), 2006

दास, प्रमोदानन्द एवं अमरेन्द्र कुमार: बिहार : इतिहास एवं संस्कृति, पटना, 2008

दासगुप्ता, जे.एन.: बंगाल इन द सिक्सटीन्थ सेन्चुरी, कलकत्ता, 1924

दिवाकर, आर.आर.: बिहार थ्रू ए एजेज, कलकत्ता, 1959

निजामी, के.ए.: स्टडीज इन मेडियवल इंडियन हिस्ट्री एंड कल्चर, इलाहाबाद, 1984

प्रसाद, ईश्वरी: हिस्ट्री ऑफ मेडियवल इंडिया, इलाहाबाद, 1948

मनुएमी, सैय्यद शाह शमीमुद्दीन: बिहार में सूफी परम्परा, पटना, 2013

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

मिश्र, रेखा, वीमेन इन मुगल इंडिया, दिल्ली, 1998

श्रीवास्तव, कन्हैया लाल एवं चौबे, झारखण्ड; मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, लखनऊ, 1990

श्रीवास्तव, आशीर्वादी लाल; मेडियवल इंडियन कल्चर, आगरा, 1964

सरकार, यदुनाथ; स्टडीज इन मुगल इंडिया, कलकत्ता, 1919

सिंह, श्याम नारायण; हिस्ट्री ऑफ तिरहुत, कलकत्ता, 1922

सिन्हा, सी.पी.एन.; मिथिला अण्डर द कर्णाटाज, पटना, 1979

सिद्दीकी; वीमेन इन इस्लाम, लाहौर, 1959

हबीब, इरफान; मध्यकालीन भारत (भाग 1 से 8 तक), दिल्ली, 1995

हबीब, एम॰ एवं निजामी, के॰ए॰ (सम्पा॰); कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री ऑफ इंडिया, भाग–5, दिल्ली, 1970

आलेख :

अमरेन्द्र, कुमार; "तिब्बती बौद्ध संत पर्यटक धर्मस्वामी की दृष्टि में मिथिला का समाज (1226–1236 ई॰)", खुदाबख्श लाइब्रेरी जर्नल, नं॰–138, अक्टूबर–दिसम्बर, 2004, पटना, 2004

अहमद, इम्त्याज; 'मेडियवल बिहार एंड द सूफीज– रिफलेक्शन ऑन द राइटिंग्स ऑफ सैय्यद हसन अस्करी", अभिलेखागार, बिहार, अंक–7, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना, 2016

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

शर्मा, सुनीता; 'मध्यकालीन बिहार में महिलाओं की भूमिका'', बिहार के विकास में महिलाओं की भूमिका, बिहार राज्य अभिलेखागार निदेशालय, पटना, 2012

हबीब, इरफान; ''पीजेन्ट इन इंडियन हिस्ट्री'', प्रेसिडेंशियल ऐड्रेस, इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1982

शोध निदेशक

(डॉ॰ कुमार अमरेन्द्र)
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
एस॰एम॰आर॰सी॰के॰ कॉलेज, समस्तीपुर
ल॰ ना॰ मि॰ विश्वविद्यालय
दरभंगा

शोधार्थी

(राजीव कुमार)
इतिहास विभाग
ल॰ ना॰ मि॰ विश्वविद्यालय
दरभंगा
पैट रौल–22100317
वर्ग क्रमांक–28

Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner